कथा सरिता

सबसे बेहतर उपहार

बहुत ही पुराने समय की बात है, मिश्र देश का एक राजा था जिस पर देवता प्रसन्न हो गये और उसके पास आये और उसे उपहार स्वरूप एक चमत्कारी तलवार दी और बोले कि जाओ और दुनिया को फतह करो। इस पर राजा ने भगवान से सवाल किया कि 'भगवान आप भी कमाल करते हैं, भला मुझे किस चीज़ की कमी है जो मैं पूरी दुनिया को फतह करूँ'। इस पर देवता ने फिर से कुछ सोचकर 'पारसमणि देते हुए राजा से कहा, ये लो पारसमणि और जितना चाहो उतने धन की प्राप्ति करो'। इस पर राजा ने फिर से सवाल किया, 'भगवान, मैं इतना धन प्राप्त करके क्या करूँगा बताओ।' राजा ने वो लेने से मना कर दिया। इस पर देवता ने उसे एक अप्सरा देते हुए कहा 'ये लो मैं तुम्हें तुम्हारे साथ रहने को ये खूबसूरत अप्सरा देता हूँ'। इस पर राजा ने कहा, भगवान मुझे ये भी नहीं चाहिए, आपके पास इन सबसे बेहतर कुछ हो तो बताओ।

देवता अब सोच में पड़ गया और कहने लगा कि सभी मनुष्य तो यही सब पाने के लिए संघर्ष करते हैं और मैं तुम्हें सहर्ष इतना सब दे रहा हूँ फिर भी तुम मना कर रहे हो! तो तुम ही बताओ मैं तुम्हारे लिए किस चीज़ की व्यवस्था करूँ जो तुम्हें पसंद हो।

राजा ने देवता से कहा, 'भगवान ज़रा सोचिए, मैं अगर तलवार को धारण करता हूँ तो भी उसकी धार भी एक न एक दिन चली जाएगी और ना हीं मैं कोई युगों-युगों तक रहने वाला हूँ, और अगर अप्सरा के लिए हाँ करता हूँ तो उसका सौंदर्य भी कोई अतुलनीय नहीं है। जबकि अगर पारसमणि को धारण करता हूँ तो धन भी कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है, तो मैं क्यों इन सबकी इच्छा रखूँ?

इसपर राजा ने ज़ारी रखते हुए कहा कि प्राकृतिक सौंदर्य से तो देवता भी धरती पर विचरण के लिए आते हैं, इसलिए आप मुझे कुछ फूलों के पौधे ही दे दीजिये, मैं इन्हें बड़ा होते और इसमें फूलों को खिलते हुए देखूँगा और उससे जीवन भर यही प्रेरणा लेता रहूँगा कि फूलों की तरह खिलना, खुशबू देना और सबके चेहरे पर मुस्कान ला देना ही सबसे बड़ा गुण और जीवन को खुशियों से भरने की कला है। इन पौधों में खिलने वाले फूलों से लोग भी शिक्षा लेंगे और वे भी इनके जैसा बनने का प्रयास करेंगे जिससे ये धरती और खुशबूदार और खुशहाली से भरपूर हो जाएगी। इससे रमणीय और इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ अधिक नहीं हो सकता।

निकलो कुएँ से बाहर

एक बार एक किसान का बैल कुएँ में गिर गया। वह बैल ज़ोर-ज़ोर से रोता रहा और किसान सुनता रहा और विचार करता रहा कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

अतत: उसने निर्णय लिया कि चूंकि बैल काफी बूढ़ा हो चुका है, अत: उसे बचाने से कोई लाभ होने वाला नहीं था और इसलिए उसे कुएँ में ही दफना देना चाहिए। किसान ने अपने सभी पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया। सभी ने एक एक फावड़ा पकड़ा और कुएँ में मिट्टी डालनी शुरु कर दी। जैसे ही बैल की समझ में आया कि यह क्या हो रहा है, वह और ज़ोर-ज़ोर से चीख चीख कर रोने लगा और फिर अचानक वह आश्चर्यजनक रूप से शांत हो गया।

सब लोग चुपचाप कुएँ में मिट्टी डालते रहे। तभी किसान ने कुएँ में झाँका तो वह आश्चर्य से सन्न रह गया। अपनी पीठ पर पड़ने वाले हर फावड़े की मिट्टी के साथ वह बैल एक आश्चर्यजनक हरकत कर रहा था। वह हिल-हिलकर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था। जैसे जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़ों से मिट्टी गिराते वैसे-वैसे वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को गिरा देता और एक सीढ़ी ऊपर चढ़ आता। जल्दी ही सबको आश्चर्यचकित करते हुए बैल कुएँ के किनारे पर पहुँच गया और फिर कूदकर बाहर भाग गया। ध्यान रखें... आपके जीवन में भी बहुत तरह से मिट्टी फेंकी जायेगी, बहुत तरह की गंदगी आप पर गिरेगी जैसे कि, आपको आगे बढ़ने से रोकने के लिए कोई बेकार में ही आपकी आलोचना करेगा, कोई आपकी सफलता से ईर्ष्या के कारण आपको बेकार में ही भला बुरा कहेगा, कोई आपसे आगे निकलने के लिए ऐसे रास्ते अपनाता हुआ दिखेगा जो आपके आदर्शों के विरूद्ध होंगे। ऐसे में आपको हतोत्साहित होकर कुएँ में ही नहीं पड़े रहना है, बल्कि साहस के साथ हर तरह की गंदगी को गिरा देना है और उससे सीख लेकर उसे सीढ़ी बनाकर बिना अपने आदर्शों का त्याग किये अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाना है।

विद्या का सदुपयोग...

एक व्यक्ति पशु-पक्षियों का व्यापार करता था। एक दिन उसे पता लगा कि उसके गुरु को पशु-पक्षियों की बोली की समझ है। उसके मन में ये ख्याल आया कि कितना अच्छा हो अगर ये विद्या उसे भी मिल जाये तो उसके लिए भी यह फायदेमंद हो। वह पहुँच गया अपने गुरु के पास और उनकी खूब सेवा पानी की और उनसे ये विद्या सिखाने के लिए आग्रह किया। गुरु ने उसे वो विद्या सिखा तो दी, लेकिन साथ ही उसे चेतावनी भी दी कि अपने लोभ के लिए वो इसका इस्तेमाल नहीं करे, अन्यथा उसे इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा। व्यक्ति ने हामी भर दी। वो घर आया तो उसने अपने कबूतरों के जोड़े को यह कहते हुए सुना कि मालिक का घोड़ा दो दिन बाद मरने वाला है। इस बात पर उसने अगले ही दिन घोड़े को अच्छे दाम पर बेच दिया। अब उसे भरोसा होने लगा कि पशु-पक्षी एक दूसरे को अच्छे से जानते हैं। अगले दिन उसने अपने कुत्ते को यह कहते हुए सुना कि मालिक की मुर्गियाँ जल्दी ही मर जाएंगी। यह सुनते ही उसने बाज़ार जाकर सारी मुर्गियों को अच्छे दामों पर बेच दिया। कई दिनों बाद उसने सुना कि शहर की अधिकतर मुर्गियाँ किसी महामारी की वजह से मर चुकी हैं, तो वो बड़ा खुश हुआ कि चलो मेरा नुकसान नहीं हुआ। हद तो तब हो गयी जब उसने एक दिन अपनी बिल्ली को यह कहते हुए सुना कि हमारा मालिक अब कुछ ही दिनों का मेहमान है। तो उसे पहले तो विश्वास ही नहीं हुआ, लेकिन बाद में अपने गधे को भी उसने वही बात दोहराते हुए सुना तो वो घबराकर अपने गुरु के पास गया और उनसे बोला कि मेरे अंतिम क्षणों में करने योग्य कोई काम है तो बता दें क्योंकि मेरी मृत्यु निकट है।

इसपर गुरु ने उसे डांटा और कहा कि मूर्ख! मैंने पहले ही तुझसे कहा था कि अपने हित के लिए इस विद्या का उपयोग मत करना, क्योंकि सिद्धियाँ न किसी की हुई हैं और न किसी की होंगी। इसलिए मैंने तुझसे कहा था कि अपने लाभ के लिए और किसी के नुकसान के लिए इनका प्रयोग मत करना।

मुज़फ्फरपुर-विहार। विधायक सुरेश शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी। साथ हैं रेडक्रॉस सोसायटी के सेक्रेट्री व बिहार स्टेट मोटर ट्रान्सपोर्ट फेडरेशन के अध्यक्ष उदय शंकर प्रसाद सिंह तथा अन्य।

दिल्ली-नरेला मंडी। असिस्टेंट कमांडेंट चिरंजी लाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दुर्गा। साथ हैं ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

राउरकेला-ओडिशा। अश्विन कुमार,एम.डी.,सेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिमला।

भुवनेश्वर-ओडिशा। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं लवेन्द्र मिश्रा,पूर्व वाइस चांसलर,उत्कल कल्चर यूनिवर्सिटी, ब्रह्माकुमारी बहनें तथा अन्य गणमान्य जन।

गुरसहायगंज-उ.प्र.। विधायक अरविंद सिंह यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं नगर विकास मंच के अध्यक्ष हरिओम गुप्ता, डॉ. नीरज गुप्ता, ब्र.कु. गायत्री व अन्य।

लखनौर-मोहाली। बी.एस.एफ. के ऑफिसर्स तथा जवानों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमन।